Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(1108)

UGC (CBCS) IIIrd Semester (New) Examination

1578

SANSKRIT

(Sanskrit Natak)

(Core)

SKT DSC–301

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks :** Regular : 70; ICDEOL : 100

नोट :– सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। कोष्ठक में दिए गए अङ्क ICDEOL के परीक्षार्थियों के लिए हैं।

भाग-क

1. (क) निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त **अथवा** एक शब्द में उत्तर दीजिए–

(i) भास द्वारा रामायण पर आधारित नाटकों की संख्या कितनी है ?

(ii) 'प्रतिमानाटक' में प्रतिमाओं का वर्णन किस अङ्क में है ?

(iii) भास के नाटकों की खोज किसने की ?

(iv) अभिज्ञानशाकुन्तल की कथा कहाँ से ली गई है ?

(v) महर्षि कण्व को शकुन्तला के विवाह का समाचार कैसे ज्ञात हुआ ?

(vi) कालिदास की कुल कितनी रचनाएँ उपलब्ध हैं ?

(vii) काव्यशास्त्र के अनुसार नाटक में अधिकतम अङ्क कितने हो सकते हैं ?

(viii) प्रस्तावना के कुल कितने भेद होते हैं ?

(ix) 'मालविकाग्निमित्रम्' किस कवि की कृति है ?

(x) भवभूति ने कितने नाटक लिखे ? 10×1=10

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(i) 'प्रतिमानाटक' के प्रथम अङ्क का सार लिखिए।

(ii) महर्षि कण्व के अनुसार कैसी युवतियाँ कुल की मानसिक पीड़ा का कारण बनती हैं ?

(iii) नाटक की परिभाषा लिखिए।

(iv) 'मुद्राराक्षस' नाटक का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(v) 'प्रतिमानाटक' में भरत द्वारा कैकेयी की भर्त्सना का वर्णन कीजिए। 5×4=20 (5×6=30)

भाग-ख

2. निम्नलिखित **दो** पद्यों (ICDEOL के लिए **तीन** पद्य) का प्रसंग सहित सरलार्थ कीजिए–

(क) शत्रुघ्न लक्ष्मण गृहीतघटेऽभिषेके
छत्रे स्वयंनृपतिना रुदता गृहीते।
सम्भ्रान्त्या किमपि मन्थरया च कर्णैः
राज्ञः शनैरभिहितं च न चास्मि राजा॥

(ख) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥

(ग) वक्तव्यं किञ्चिदस्मासु विशिष्टः प्रतिपाल्यते।
किं कृतः प्रतिषेधोऽयं नियम प्रभविष्णुता॥

(घ) यस्य त्वया व्रण विरोपणमिंगुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुश सूचि विद्धे।
श्यामाकमुष्टि परिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्र कृतकः पदवीं मृगस्ते॥

2×5=10
(3×5=15)

भाग-ग

3. किन्हीं **दो** सूक्तियों (ICDEOL के लिए **तीन** सूक्तियाँ) की व्याख्या कीजिए–

(क) गुर्वपि विरह दु:खमाशाबन्ध: साहयति।

(ख) अथवा बहुवृतान्तानि राजकुलानि नाम।

(ग) न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।

(घ) अहो क्रिया माधुर्यं पाषाणानाम्। 2×5=10 (3×5=15)

भाग-घ

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अभिज्ञानशाकुन्तल के चौथे अङ्क का सार लिखिए।

(ख) अङ्क तथा जनान्तिक पारिभाषिक शब्दों पर टिप्पणी लिखिए।

अथवा

(ग) अभिज्ञानशकुन्तल के चतुर्थ अङ्क की विशेषता क्या है ? निरूपण कीजिए।

(घ) सूत्रधार तथा नेपथ्य पर टिप्पणी लिखिए। 10(15)

भाग-ङ

5. शूद्रक के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भवभूति का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का भी वर्णन कीजिए। 10(15)